हिंदी कविता : कितने आकाश

ISSN 2394-1723
मूल्य : 40 रुपये

वागर्थ

वर्ष 31 अंक 358 सितंबर–2025

हिंदी में भाषा प्रदूषण का संकट

रविकांत जवरीमल्ल पारख अजय तिवारी
अवधेश प्रधान अवधेश प्रसाद सिंह
मृत्युंजय श्रीवास्तव अच्युतानंद मिश्र
(प्रस्तुति : सूर्यदेव राय)

कहानियां

सूर्यनाथ सिंह प्रियंका ओम अनुपमा ऋतु
नृसिंह राजपुरोहित (राजस्थानी)
गुरुप्रसाद मैनाली (नेपाली)

भारतीय भाषा परिषद

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका

वर्ष 31, अंक 358, सितंबर 2025

संपादक

शंभुनाथ

प्रबंध संपादक

प्रदीप चोपड़ा

प्रकाशक

डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग

अंक सज्जा

सुशील कान्ति

ऑनलाइन मल्टीमीडिया संपादक

उपमा ऋचा

upmamcreat@gmail.com

संपादकीय विभाग

36 ए, शेक्सपियर सरणी

कोलकाता–700017

vagarth.hindi@gmail.com

7449503734

(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण

तारक नाथ राय

इस अंक में

हिंदी संस्कृति की जमीन : **संपादकीय** 5

कहानियां

चकरी पर दर्ज तारीखें : **सूर्यनाथ सिंह** 12

रेड वेलवेट क्लब : **प्रियंका ओम** 24

मुस्तफा का पहला रोजाः **अनुपमा ऋतु** 32

भारत भाग्य विधाता (राजस्थानी) : **नृसिंह राजपुरोहित**

(अनुवाद : **नीरज दइया**) 38

पुआल की आग (नेपाली) : **गुरुप्रसाद मैनाली**

(अनुवाद : **निमा लामा**) 44

कविताएं

कुमार विश्वबंधु/प्रतिभा चौहान/सुभाष राय/
सुशील स्वतंत्र/अर्चना लार्क/चंद्रबिंद/अनिरुद्ध सिन्हा/
गोविंद सेन/अनामिका अनु/ऋषभ तिवारी तथागत/निवेदिता
पाठक/राजीव कुमार तिवारी 50

बांग्ला कविता : **नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती**

(अनुवाद : **सुरेश शॉ**) 62

परिचर्चा

हिंदी में भाषा प्रदूषण का संकट : **रविकांत/जवरीमल्ल**
पारख/अवधेश प्रधान/अवधेश प्रसाद सिंह/अजय
तिवारी/मृत्युंजय श्रीवास्तव/अच्युतानंद मिश्र

(प्रस्तुति : **सूर्यदेव राय**) 65

विश्वदृष्टि

नॉर्वे की कविताएं : **रोल्फ जेकोब्सन**

(अनुवाद : **राजेश झा**) 96

समीक्षा संवाद

हिंदी कविता : कितने आकाश : **संजय जायसवाल**
(विजय बहादुर सिंह, मदन कश्यप, सावित्री बड़ाईक, सं.अरुण शीतांश, शंकरानंद और देवेंद्र चौबे की पुस्तकें) 98

सोशल मीडिया 112

विविध

पाठक संसद/सांस्कृतिक समाचार/किताबें 116

लघुकथा

अविश्वास : **रविशंकर सिंह** 37

बतरस

भाषा : हमारी अस्मिता : **कुसुम खेमानी** 120

देश-देशांतर

राजेंद्र भंडारी (नेपाली)/ **रॉल्फ जेकोब्सन** (नॉर्वे)

मल्टी मीडिया

भगवत रावत की कविता **– हमने चलती चक्की देखी**
वाचन : **अनुपमा ऋतु**

रेखांकन और चित्र :
नेट से साभार

वागर्थ **सदस्यता और बिक्री संपर्क**

एक प्रति : 40/-
सामान्य वार्षिक सदस्यता (डाक व्यय सहित) : 450 रुपये
वार्षिक सदस्यता (रजिस्टर्ड डाक) 450+510 = 960 रुपये
त्रैवार्षिक सदस्यता : 1350 रु.। रजिस्टर्ड डाक से = 2900/-
आजीवन : 10,000 रुपये/**(साधारण डाक)** विदेश : **वार्षिक** : 80 डॉलर
भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें
एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street, A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।
भुगतान के बाद एस एम एस या व्हट्सअप कर दें 8910269814 : **मीनाक्षी दत्ता**
जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक
समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।

आप क्यू आर कोड स्कैन करके भी **भारतीय भाषा परिषद** के नाम भुगतान कर सकते हैं। भुगतान करने के बाद मोबाइल नंबर सहित संपूर्ण विवरण भेज दें।

● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
© सर्वाधिकार सुरक्षित
● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।

● वेबसाइट : **www.bharatiyabhashaparishad.org**

वागर्थ प्रबंध प्रभार **: मीनाक्षी दत्ता**
वितरण तथा अन्य कार्य **: अशोक बारीक, बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक, संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक**

संपादकीय

हिंदी संस्कृति की जमीन

शायद हम सपने में भी नहीं सोच पाते हैं कि हमारी एक इंद्रधनुषीय हिंदी संस्कृति है और हिंदी लोगों की लगभग 1300 साल से विकसित जो जीवंत विरासत है उसे जानने तथा अपने जीवन में जगह देने की बहुत जरूरत है।

हम बंगालियों, मराठियों, तमिलों आदि को अपनी-अपनी संस्कृति पर चर्चा करते देखते हैं, तब भी नहीं सोचते कि राजस्थान से बिहार तक और उत्तराखंड-दिल्ली-उत्तर प्रदेश से मध्य प्रदेश-छत्तीसगढ़ आदि तक आम लोक ने एक साझी हिंदी संस्कृति किस तरह रची है और उससे हम फिलहाल कितने विच्छिन्न हैं। हम आमतौर पर अपने-अपने धर्म, जाति और प्रांतीयता में काफी उलझे रहते हैं। इसलिए नहीं देख पाते कि सैकड़ों साल पहले से किस तरह हिंदी क्षेत्र में आम लोकवृत्त या नागरिक परिसर का निर्माण होता रहा है।

निश्चय ही राजस्थान के लोगों से उत्तर प्रदेश-बिहार के लोगों के पर्व-त्योहार, रीति-रिवाज, खानपान आदि में भिन्नता है। हिंदी क्षेत्र में भाषाएं-बोलियां भी कई हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार इनकी संख्या 50 है। हमारे देश के किसी अन्य राष्ट्रीय भाषा क्षेत्र में इतनी विविधता नहीं है, इतने उत्सव और रंग-ढंग नहीं हैं। कलह भी अन्य किसी प्रदेश से हिंदी राज्यों में ज्यादा है।

हम यह भी देख सकते हैं कि हिंदी संस्कृति के निर्माण में भक्ति आंदोलन, नवजागरण तथा छायावाद का सबसे अधिक योगदान है। ये हमारे सामाजिक इतिहास का सांस्कृतिक त्रिभुज हैं और विविधतापूर्ण हिंदी संस्कृति की जमीन कहे जा सकते हैं। इनके उदारवाद की पृष्ठभूमि में ही हिंदी क्षेत्र में आगे चलकर बड़े-बड़े जन आंदोलन संभव हुए।

हिंदी संस्कृति : दीर्घ मध्यांतरों के बावजूद

भारत जैसे बहुभाषिक-बहुसांस्कृतिक देश में वर्चस्व की जगह साझा जीवन-साझी संस्कृति ही सही पथ है। इसके लिए बुद्धिसम्मत सोच, मानवीय संवेदना और नैतिक परिपक्वता की जरूरत होती है। यदि ये चीजें न हों तो आम लोग सस्ते समाधान की ओर आकर्षित होते हैं।

यदि हमारे देश में साझा जीवन-साझी संस्कृति में खलल पड़ा है, तो इसकी बुनियाद में औपनिवेशिक विभेद ज्ञान से प्रेरित तोड़फोड़ है। अंग्रेजों के जाने के बाद भी बौद्धिक उपनिवेशवाद बरकरार रहा है। इसने अपनी विनाशकारी भूमिका से हमारे देश की उच्च परंपराओं से एक बौद्धिक-नैतिक विच्छेद पैदा